क. अनुरोध: "मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे।"

- **फिरौन का जवाब (निर्गमन 5:1-2)**
  - थुतमोस तृतीय एक बच्चा था जब उसे हत्शेपसुत के शासन में सिंहासन पर बिठाया गया ताकि मूसा को फिरौन घोषित होने से रोका जा सके। जब थुतमोस अभी किशोर ही था तब मूसा मिस्र से भाग गया था।
  - चालीस साल बाद, मूसा ने खुद को फिर से राज-दरबार में पाया। क्या वह सिंहासन पर अपना अधिकार जताने आया था? बिलकुल नहीं। अनुरोध सरल था: "मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे" (निर्गमन 5:1)।
  - थुतमोस का जवाब मूसा को नहीं, बल्कि खुद परमेश्वर को चुनौती थी। संक्षेप में, वह परमेश्वर के अस्तित्व को ही चुनौती दे रहा था (निर्गमन 5:2)।
  - उसके रवैये का इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य में 18वीं सदी की क्रांति के दौरान फ्रांसीसी राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने के प्रतीक के रूप में किया गया है (प्रकाशितवाक्य 11:8)। फिरौन की तरह, फ्रांसीसी गणराज्य ने धर्म को समाप्त करने की घोषणा की और खुद को नास्तिक राष्ट्र घोषित कर दिया।
- **लोगों का जवाब (निर्गमन 5:3-21)**
  - जब मूसा ने लोगों के सामने परमेश्वर द्वारा बताए गए चिह्न दिखाए, तो उन्होंने विश्वास किया और आराधना की (निर्गमन 4:29-31)। हम कल्पना कर सकते हैं कि वे अपने अनुरोध पर फिरौन की प्रतिक्रिया का कितनी उत्सुकता से इंतजार कर रहे थे।
  - जवाब वाकई अनपेक्षित था। फिरौन ने न केवल मना कर दिया, बल्कि उन्हें आवश्यक सामग्री दिए बिना ही अपना काम करने के लिए मजबूर किया, लेकिन वही परिणाम की मांग की (निर्गमन 5:6-8)। इस तरह के तर्कहीन आदेश को लागू करने का बहाना क्या था?
  - थुतमोस के अनुसार मूसा और हारून उन्हें "अपने परिश्रम से विश्राम [शबात] दिलाना चाहते थे" (निर्गमन 5:5)। अगर उनके पास धर्म और स्वतंत्रता के बारे में बात करने का समय था, तो उनके पास भूसा ढूँढ़ने का भी समय होगा (निर्गमन 5:9, 17)।
  - जब उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया, तो कामगारों ने फिरौन से शिकायत की, लेकिन उनकी बात अनसुनी कर दी गई। फिर वे मूसा और हारून के खिलाफ हो गए और उन पर उनकी स्थिति को और खराब करने का आरोप लगाया (निर्गमन 5:20-21)।
- **परमेश्वर का जवाब (निर्गमन 5:22-6:8)**
  - फिरौन मूसा पर क्रोधित हो जाता है। लोग मूसा पर क्रोधित हो जाते हैं। मूसा ... क्रोधित नहीं होता, लेकिन वह निराश हो जाता है, और अपने संदेह के साथ परमेश्वर की ओर मुड़ता है: "हे प्रभु, तूने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों की? और तू ने मुझे यहाँ क्यों भेजा?" (निर्गमन 5:22)।
  - आइए हम परमेश्वर की प्रतिक्रिया की जाँच करें (निर्गमन 6:1-8):
    - क. *मैंने क्या किया:* मैं भविष्यद्वक्ताओं के सामने प्रकट हुआ; मैंने उनके साथ अपनी वाचा स्थापित की; मैंने उन्हें कनान देश देने का वादा किया; मैंने लोगों का कराहना सुना है; मैंने अपनी वाचा को स्मरण किया है।
    - ख. *मैं क्या करूँगा:* मैं उनसे मिस्रियों के अत्याचार दूर करूँगा; मैं उन्हें गुलामी से मुक्त करूँगा; मैं अपनी शक्ति का उपयोग करूँगा; मैं उन्हें अपने लोग बनाने जा रहा हूँ; मैं उनका परमेश्वर बनूँगा; मैं उन्हें कनान देश दूँगा।
- **मूसा का जवाब (निर्गमन 6:9-13)**
  - परमेश्वर के उत्साहवर्धक शब्दों के बाद, मूसा ने फिर से लोगों से बात की, लेकिन उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी (निर्गमन 6:9)। बाद में, परमेश्वर ने उसे फिर से फिरौन से बात करने के लिए कहा ताकि वह इस्राएल की स्वतंत्रता के लिए कह सके (निर्गमन 6:10-11)।
  - मूसा ने इनकार कर दिया, और फिर से अपने बहाने बनाए: यदि मेरी प्रजा मेरी बात नहीं सुनेगी, तो फिरौन मुझ भद्दे बोलनेवाले की कैसे सुनेगा? (निर्गमन 6:12)
  - मूसा उदास, हताश और निराश था। लेकिन, अन्य महान हस्तियों की तरह जिन्होंने वैसा ही महसूस किया था - जैसे कि आसाफ और अय्यूब - वह निराशा में नहीं डूबा। परमेश्वर पर उसका भरोसा उसकी वर्तमान भावनाओं से कहीं ज़्यादा मज़बूत था।
  - जब हम निराशा का अनुभव करते हैं, तो हमें आसाप के शब्दों को अपना बनाना चाहिए। (भजन संहिता 73:23-26)।

ख. मूसा और हारून की भूमिका (निर्गमन 6:28-7:7)

- मिस्र में प्रारंभिक असफलताओं के बाद, परमेश्वर को मूसा को पुनः उसके सहायक और प्रवक्ता के रूप में हारून की भूमिका की याद दिलानी पड़ी (निर्गमन 7:1-2)।
- इस अवसर पर उसने भविष्यद्वक्ताओं की भूमिका की तुलना की। वे परमेश्वर से संदेश प्राप्त करते थे और उसे हम तक पहुँचाते थे। इस अर्थ में मूसा परमेश्वर की भूमिका निभाता है और हारून भविष्यद्वक्ता की।
- जैसा कि बाद में कई भविष्यद्वक्ताओं के साथ हुआ, परमेश्वर ने चेतावनी दी कि उसका संदेश सुना नहीं जाएगा, और उसे बड़ी शक्ति के साथ कार्य करना होगा (निर्गमन 7:3)।
- बाद के भविष्यवक्ताओं की तरह, मूसा को लोगों और फिरौन से बात करनी थी, "चाहे वे सुनें या न सुनें; तौभी तू मेरे वचन उन से कहना, वे तो बड़े विद्रोही हैं।" (यहेजकेल 2:7)। यह हमारे लिए भी सच है, क्योंकि हम इस धरती पर परमेश्वर की सुनाई देने वाली आवाज़ हैं।